HIN3B18c Les textes d'idées et leur métalangage

Texte 1 : कँवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, deuxième édition revue et augmentée, Itihas Bodh Prakashan, Allahabad, septembre 2002

Chapitre **दलित विवर्श का अर्थ और अर्थवत्ता**, pp 15-26

I – निम्नलिखित प्रश्नों के हिन्दी में उत्तर दीजिए :

१ - लेखक हिन्दुओं में ब्राह्मण और अछूत के अलग-अलग "तत्त्व" होने की प्रचलित धारणा का खंडन किस प्रकार करता है ?

२ - लेखक के अनुसार भारत में प्रचलित जाति-व्यवस्था क्यों और कैसे स्थापित की गई ?

३ - दलित चिंतकों के नज़रिये में जो जाति-व्यवस्था संबंधित मार्क्सवादी अवधारणा है वह अपूर्ण क्यों है ?

II – Traduisez en français : extrait page 24 de डॉ० आंबेडकर की मान्यता थी कि संपत्ति की बराबरी ही वास्तविक सुधार नहीं है ।(1ère ligne du premier paragraphe) à मज़बूत करने में सफल क्यों नहीं हो सके ? (1ère ligne du second paragraphe)